

# कंगाल बनो

## यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का प्रश्न (लूका 7:18-22)

18 यूहन्ना को उसके चेलों ने इन सब बातों का समाचार दिया। 19 तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने के लिये भेजा, “क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी और की बाट देखें?” 20 उन्होंने उसके पास आकर कहा, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट देखें?” 21 उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और पीड़ाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत से अन्धों को आँखें दीं; 22 और उसने उनसे कहा, “जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्ध देखते हैं, लंगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जब येशु के बारे में सवाल भेजा, तो येशु ने कोई सीधा उत्तर नहीं दिया, बल्कि **असाधारण चमत्कारों के द्वारा स्वयं को प्रमाणित किया**। यही उनका तरीका था—वे अपने कार्यों से प्रकट करते थे कि वे कौन हैं।

येशु ने उत्तर में जो कहा, उसमें **छह मुख्य बातें** थीं:

1. **अंधे देखने लगते हैं** – एक अंधे व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ज़रूरत उसकी दृष्टि होती है। येशु ने यह आशीष देकर दिखाया कि वे प्रकाश और सत्य के दाता हैं।
2. **लंगड़े चलने फिरने लगते हैं** – येशु ने उन्हें चलने योग्य बनाया ताकि वे आत्मनिर्भर और समाज में स्वतंत्र रूप से रह सकें।
3. **कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं** – कोढ़ी समाज से बहिष्कृत होते थे, लेकिन येशु ने न केवल उनके शरीर को चंगा किया, बल्कि उन्हें सम्मान और समाज में पुनः स्थान भी दिलाया।
4. **बहरे सुनने लगते हैं** – श्रवण शक्ति के बिना व्यक्ति अपने परिवार, समाज और परमेश्वर के वचनों से वंचित रह जाता है। येशु ने उनके लिए यह बाधा भी हटा दी।
5. **मृत जीवित किए जाते हैं** – मृत्यु को अपरिवर्तनीय माना जाता है, लेकिन येशु ने इसे गलत सिद्ध कर दिया। उनका अनुग्रह मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करता है।
6. **कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है** – यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। येशु के अनुसार, **सबसे धन्य वे हैं जो आत्मिक रूप से "कंगाल" बनते हैं**, अर्थात् जो अपनी असहायता को पहचानते हैं और परमेश्वर पर पूरी तरह निर्भर रहते हैं।

## "कंगाल बनो" का अर्थ क्या है?

1. इसका अर्थ है **अपने आत्मिक अभाव को पहचानो** और परमेश्वर पर पूरी तरह निर्भर रहो।
2. अपनी क्षमताओं, धन, ज्ञान या धार्मिकता पर भरोसा मत रखो, बल्कि **येशु की कृपा को स्वीकार करो**।
3. कंगाल का मतलब भिखारी नहीं, बल्कि **ऐसा व्यक्ति है जो जानता है कि उसके पास कुछ भी नहीं है और उसे परमेश्वर की पूर्णता की जरूरत है**।

यह सभी बातें तो ठीक है कि जिसे जिस चीज़ की सबसे अधिक आवश्यकता होती है, उसे वह चीज़ यीशु मसीह अपने अनुग्रह से दे देते हैं। परंतु यदि ऐसा है, तो कंगालों को धन मिलना चाहिए ताकि उनकी गरीबी मिट जाए, क्योंकि कंगाल तो वे हैं जिनके पास अपने पेट भरने तक का भी धन नहीं। फिर यीशु ऐसे लोगों को खाने-पीने की वस्तुएँ या धन-दौलत देकर उनकी गरीबी क्यों नहीं मिटा देते? इसके बजाय, उन्हें सुसमाचार क्यों सुनाते हैं?

ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस प्रकार अंधे को दृष्टि की, लंगड़े को चलने की, कोढ़ी को शुद्धि की, बहरे को सुनने की और मरे हुए को पुनर्जीवित होने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार **कंगाल को सुसमाचार की सबसे अधिक आवश्यकता होती है**। क्योंकि भोजन देने से केवल उनके शरीर की भूख मिटेगी, धन देने से उनका जीवन आसान हो जाएगा, लेकिन यह सब उन्हें उस शांति और तृप्ति का अनुभव नहीं करा सकता, जो उनके हृदय को सदा के लिए संतोष दे। वह शांति, जो उनके कंगालपन के कारण समाज और लोगों द्वारा किए गए तिरस्कार और उपेक्षा के बावजूद उन्हें यह विश्वास दिलाए कि उनके लिए एक ऐसा राज्य है, जहाँ वे अपने विश्वास के आधार पर मूल्यवान माने जाएंगे, और जहाँ उनके **धन की कमी के कारण कोई उन्हें छोटा नहीं समझेगा**।

## 1. कंगालों को धन क्यों नहीं दिया गया?

यदि येशु कंगालों को केवल धन दे देते, तो वह उनकी **सिर्फ अस्थायी समस्या** का समाधान होता। लेकिन उन्होंने **उन्हें सुसमाचार देकर उनकी आत्मिक स्थिति को सुधारने का अवसर दिया**—एक ऐसा अवसर जो उन्हें अनन्तकाल तक धन्य कर सकता था।

**सामान्य धन-दौलत मिल जाने से:**

1. वे शायद कुछ समय के लिए सुखी रहते, लेकिन सच्ची शांति और उद्धार नहीं पाते।
2. धन से वे सांसारिक कठिनाइयों से उबर सकते थे, लेकिन आत्मिक रूप से अधूरे रहते।

**परंतु सुसमाचार सुनाने से:**

1. उन्हें पता चला कि वे केवल गरीबी से मुक्त नहीं, बल्कि **स्वर्गीय राज्य में सहभागी हो सकते हैं**।
2. उन्हें यह एहसास हुआ कि **ईश्वर उन्हें दया और प्रेम से स्वीकार करते हैं, न कि उनके धन या समाज में स्थिति के आधार पर**।

## 2. सच्ची आवश्यकताओं की पूर्ति

येशु ने यह सिद्ध कर दिया कि **जिस चीज़ की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है, वह वही प्रदान करते हैं**।

1. **अंधों को दृष्टि दी** – क्योंकि उन्हें देखने की ज़रूरत थी।
2. **लंगड़ों को चलने की शक्ति दी** – क्योंकि उनके लिए यह सबसे ज़रूरी था।
3. **कोढ़ियों को शुद्ध किया** – ताकि वे समाज में फिर से स्वीकार किए जाएँ।
4. **मृतकों को जीवन दिया** – क्योंकि यह उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता थी।
5. **कंगालों को सुसमाचार दिया** – क्योंकि यह उनकी **सबसे गहरी ज़रूरत थी**।

### 3. आत्मिक रूप से "कंगाल" बने रहना क्यों आवश्यक है?

येशु ने सिखाया कि केवल वही लोग सच्ची आशीष पाएंगे, जो परमेश्वर पर पूरी तरह निर्भर होते हैं।

1. यदि कोई केवल चंगाई चाहता है, तो वह सिर्फ बीमारी से मुक्त होगा, लेकिन आत्मिक जीवन नहीं पाएगा।
2. यदि कोई केवल धन और सांसारिक सफलता चाहता है, तो वह केवल एक आरामदायक जीवन पाएगा, लेकिन अनन्त जीवन नहीं।
3. परंतु यदि कोई येशु को चाहता है, तो उसे सच्ची शांति, उद्धार और अनन्त जीवन प्राप्त होगा।

### 4. हमें क्या सीखना चाहिए?

1. हमें केवल सांसारिक आशीषों की लालसा नहीं करनी चाहिए, बल्कि येशु को पाने की लालसा रखनी चाहिए।
2. हमें आत्मिक रूप से "कंगाल" बने रहना चाहिए, ताकि हम हर दिन येशु की जरूरत महसूस करें।
3. हमें केवल अस्थायी मदद नहीं करनी चाहिए, बल्कि लोगों तक **सुसमाचार पहुँचाना चाहिए**, ताकि उनका संपूर्ण जीवन बदल जाए।
4. यदि हमारे पास बहुत कुछ है लेकिन **येशु नहीं, तो हमारे पास कुछ भी नहीं है**। और यदि हमारे पास **येशु है, तो हमें किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं**।

धन्य हैं हमारे येशु और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture

Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha

Date: 25<sup>th</sup> February 2025

Contact: sks.officeuse@gmail.com

---

I sincerely thank my respected Pastor, Rev. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

**With gratitude,**

Sonu Kumar Saha